Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.357
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2505S01V13P009

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Scientific Research May'25
Issue–V(I), Volume–XIII

शिक्षक प्रशिक्षुओं की पंचकोषीय अवधारणा

***वंदना**
*शोधार्थिनी, शिक्षा विभाग हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय (केंद्रीय विश्वविद्यालय) श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखंड
vandananautiyal70@gmail.com

****प्रो. सीमा धवन**
**शोध निर्देशिका, प्रोफेसर, शिक्षा विभाग हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय (केंद्रीय विश्वविद्यालय) श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखंड
seemahnbedu@gmail.com

*****शिल्पी भंडारी**
***शोधार्थिनी, शिक्षा विभाग हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय (केंद्रीय विश्वविद्यालय) श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखंड
shilpibhandari0407@gmail.com

सार
पंचकोष शब्द संस्कृत से लिया गया है जिसका तात्पर्य मानव अस्तित्व के पाँच कोषों से है जो अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष और आनंदमय कोष हैं। यजुर्वेद में तैत्तिरीय उपनिषद में उल्लेखित पंचकोष की अवधारणा में शरीर, मन और संज्ञानात्मक कार्यप्रणाली को एक एकीकृत तंत्र के रूप में लिया और समझा जाता है। पंचकोषीय अवधारणा, भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) की आधारशिला है, जो मानव अस्तित्व और कल्याण पर समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। यह हमारे शारीरिक, ऊर्जावान, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक आयामों के अंर्तसंबंध पर बल देता है। विकास की अवधारणा को आधार बनाते हुए नयी शिक्षा नीति 2020 दस्तावेज के आधार पर भारतीय विद्यालयी पाठ्यचर्या रूपरेखा 2022 को तैयार किया गया है, जिसकी उपयोगिता के आधार पर इस अवधारणा को अन्य शैक्षिक स्तरों पर भी लागू किया जा सकता है। अतः पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति सेवारत शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है। शोध कार्य में मात्रात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है। यह शोध नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षकों एवं छात्र प्रशिक्षुओं की अभिवृति को जानने में एवं पंचकोषीय अवधारणा के प्रति जागरूक करने में सहायक सिद्ध होगा, जिससे कि छात्र एवं शिक्षक कक्षा–कक्ष में पंचकोष के ज्ञान की महत्वता एवं उपयोगिता से लाभान्वित हो सके।

कुंजी शब्द (Key-words)– पंचकोष, समग्र विकास, पंचकोषीय समग्र विकास, महत्वता एवं उपयोगिता, शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षु, अभिवृति।

प्रस्तावना–
यौगिक दर्शन में, ऐसी अनेक अवधारणाएँ हैं जो हमें मनुष्य और उसकी प्रकृति को समझने में मदद करती हैं। ऐसी ही एक अवधारणा है पंच कोष। यजुर्वेद में सबसे प्राचीन उपनिषद, तैत्तिरीय उपनिषद, भारतीय आध्यात्मिक विरासत की जीवित परंपराओं में से एक और व्यापक रूप से प्रचलित उपनिषद है। तैत्तिरीय उपनिषद में तीन व्यापक अध्यायों अर्थात् शिक्षा वल्ली, ब्रह्मानंद वल्ली, और ब्रिघु वल्ली का उल्लेख है। तैत्तिरीय उपनिषद ने पंचकोष और उनके विकास की अवधारणा, गुरु वरुण और उनके पुत्र भृगु के बीच संवाद के माध्यम से दी है। योग दर्शन के अनुसार हमारा भौतिक शरीर, तीन शरीरों और उसमें निहित पांच कोषों, जिसमें स्थूल शरीर के अंतर्गत अन्नमय कोष एवं प्राणमय कोष, सूक्ष्म शरीर के अंतर्गत मनोमय कोष एवं विज्ञानमय कोष, तथा कारण शरीर के अंतर्गत आनन्दमय कोष से निर्मित है। हमारे भौतिक शरीर का सबसे पहला और सबसे बाहरी आवरण अन्नमय कोष है, जिसमें 10 इंद्रियों (5 कर्मेंद्रियां और 5 ज्ञानेंद्रियां) के साथ स्थूल शरीर शामिल है। अन्नमय कोष, प्रकृति के पांच महान तत्वों (पंच महाभूत) का एक संयोजन है, जिसमें भोजन से निर्मित और पोषित इस आवरण की देखभाल, स्वच्छता, एवं स्वस्थता और अशुद्धियों से मुक्ति, एवं आंतरिक परतों तक आसानी से पहुँचने की क्रियाविधि सम्मिलित है। प्राणमय कोष का तात्पर्य प्राण से है, जो जीवन शक्ति या ऊर्जा है। आयुर्वेद में वर्णित इसमें पंच प्राण और 5 कर्मेन्द्रियाँ सम्मिलित हैं। पंच प्राण शरीर के मौलिक आवरण और कर्मेन्द्रियां कामकाजी प्रणाली का प्रतिनिधित्व करते हैं। भारतीय मनोविज्ञान के अनुसार, इन पाँच कोषों, अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष, आनन्दमय कोष में चेतन,

अवचेतन और अचेतन तीनों चेतनाओं का वास होता है। स्थूल शरीर की प्रत्येक कोशिका एक–दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है और एक–दूसरे को प्रभावित करती है (च्ंदबींस, 2023)। मनोमय कोष, जो कि मानसिक आवरण है जिसमें मन और ज्ञानेंद्रियां शामिल हैं। यह आवरण चेतन मन, अवचेतन मन, और अचेतन मन में हमारे विचारों, भावनाओं और संवेदनाओं को निर्मित कर सभी निर्णयों और कार्यों को विनियमित कर प्राण और भौतिक शरीर की गतिविधियों के नियंत्रण से सम्बंधित है। विज्ञानमय कोष बौद्धिक कोष है, जिसमें तर्क करना, अहंकार की उत्पत्ति एवं बुद्धि में दृढ़ स्थिरता विकसित होती है। इस कोष में उच्च मन की जागरूकता और व्यक्ति की चेतना के उच्च स्तरों को जानने और उनका दोहन करने के सहज ज्ञान की अनुभूति का होना सम्मिलित है। आनंदमय कोष सबसे आंतरिक कोष (आवरण) जो शुद्ध आनंद एवं ध्यान का शाश्वत केंद्र है पाँचों कोषों में सबसे श्रेष्ठ और कठिन है इसलिए, आनंदमय कोष को पारलौकिक शरीर के रूप में वर्णित किया जाता है। यह आवरण अचेतन अथवा अतिचेतन मन से जुड़ा हुआ है। यह संवेदी धारणाओं और बाहरी उत्तेजनाओं से मुक्त होकर, मन से परे जाने में समर्थ है। पतंजलि के अष्टांगिक योग और ध्यान का चरण–दर–चरण अभ्यास व्यक्ति को इस परत से जोड़ने और आनंद की स्थिति प्राप्त करने में सहायक है। बच्चों की शिक्षा के लिए पंचकोष अवधारणा जिसमें शारीरिक विकास के पांच आयामों की बात की गई है, जिसमें प्राणिक विकास, भावनात्मक विकास, मानसिक विकास, बौद्धिक विकास, आध्यात्मिक विकास सम्मिलित है (नई शिक्षा नीति 2020)। भारतीय दार्शनिक संरचना, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक पहलुओं सहित व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं (सरीफ, 2024)। पंचकोष रूपरेखा सिद्धांत में मानव अस्तित्व की पांच परतें शामिल हैं– शारीरिक, ऊर्जावान, मानसिक, बौद्धिक और आनंदमय। ये सभी परतें समग्र आनंद प्रदान करने में योगदान करती हैं (कुमार, 2024)। आईकेएस के साथ समकालीन ज्ञान को एकीकृत करने से वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों का समाधान किया जा सकता है (चंदेल और पराशर, 2024)। बच्चों में भावनात्मक, सामाजिक और संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देने के लिए इस प्राचीन दर्शन को समकालीन शिक्षण प्रतिमानों में एकीकृत किया जा सकता है (कौशल, 2023)। पूर्व प्राथमिक शिक्षा के लिए पंचकोष आधारित विकास और गतिविधि कार्यक्रमों की प्रभावशीलता उद्देश्यपूर्ण है (पंचाल, 2023)। वर्तमान चुनौतियों के लिए समग्र समाधान बनाने में भी इन पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों, आईकेएस दर्शन, गणित, खगोल विज्ञान और चिकित्सा सहित विभिन्न विषयों को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ एकीकृत करना उद्देश्यपूर्ण है (मांडवकर, 2023)। मानव जीवन हेतु पांच कोषों का आपसी संतुलन आवश्यक है प्रत्येक व्यक्ति का विकास पंचकोष के विकास से पूर्णतया संबंधित है (चौहान, 2023)। पंचकोष के माध्यम से प्रीस्कूल के निर्धारित पैमानो में सीखने के परिणामों में पंचकोषीय तत्व लाभकारी हैं (नमिता, 2023)। अतः एन.ई.पी. 2020 के सन्दर्भ में पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति लिंग एवं विषय वर्ग के आधार पर शिक्षकों एवं छात्र प्रशिक्षुओं की अभिवृति का अध्ययन करना इस शोध का मुख्य उद्देश्य है।

शोध विधि–

प्रस्तुत अध्ययन में मात्रात्मक शोध विधि प्रयुक्त की गयी एवं हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय एवं इससे संबद्ध सरकारी और निजी शिक्षक शिक्षा संस्थानों के शिक्षक प्रशिक्षुओं एवं माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों को शोध कार्य की जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया, जिसमें कुल 200 शिक्षक प्रशिक्षुओं एवं सेवारत शिक्षकों का स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन पद्धति द्वारा न्यादर्श के रूप में चयन किया गया। आंकड़ों के संग्रहण हेतु स्व–निर्मित उपकरणों, Panchkoshiya Holistic Development Attitude Scale (Pupil Teacher), Panchkoshiya Holistic Development Attitude Scale (Secondary Level Teachers) का प्रयोग किया गया। शिक्षकों की अभिवृत्ति के अध्ययन हेतु 35 तथा शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति के अध्ययन हेतु 37 कथनों को सम्बन्धित उपकरण में सम्मिलित किया गया, जिन्हें 5 बिन्दु लिकर्ट रेटिंग पैमाने में विभाजित किया गया। शोध उपकरण की वैधता, स्वरुप वैधता के आधार पर ज्ञात की गयी जिसके लिए निर्मित उपकरण को क्षेत्र से सम्बंधित विशेषज्ञों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों को प्रेषित किया गया एवं उनसे प्राप्त सुझाव के आधार पर उपकरणों को अंतिम स्वरुप प्रदान किया गया। सकारात्मक कथनों को क्रमशः पूर्णतः सहमत (5), सहमत (4), तटस्थ (3), असहमत (2), पूर्णतः असहमत (1) अंक प्रदान किये गये तथा नकारात्मक कथनों का अंकन विपरीत प्रक्रिया पूर्णतः असहमत (5), असहमत (4), तटस्थ (3), सहमत (2), पूर्णतः सहमत (1) अंक प्रदान किये गये।

शिक्षक प्रशिक्षुओं तथा शिक्षकों के पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति अभिवृत्ति को पांच वर्गों में वर्गीकृत किया गया जिसमें शिक्षक प्रशिक्षुओं द्वारा प्राप्त अंकों में 37–67 का बहुत कम, 68–97 का कम, 98–127 का औसत, 128–157 का उच्च तथा 158–187 का बहुत उच्च व माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों द्वारा प्राप्त अंकों में 35–63 का बहुत कम, 64–91 का कम, 92–119 का औसत, 120–147 का उच्च तथा 148–175 का बहुत उच्च के रूप में मापन किया गया।

परिणाम एवं निष्कर्ष–

तालिका संख्या 1 शिक्षक प्रशिक्षुओं एवं शिक्षकों की अभिवृति के स्तर

Category	Percent (pupil teachers 100%)	Percent (teachers 100%)
Very low	00%	00%
Low	1.34%	00%
Average	46.67%	12%
High	51.99%	76%
Very high	00%	12%
Total	100%	100%

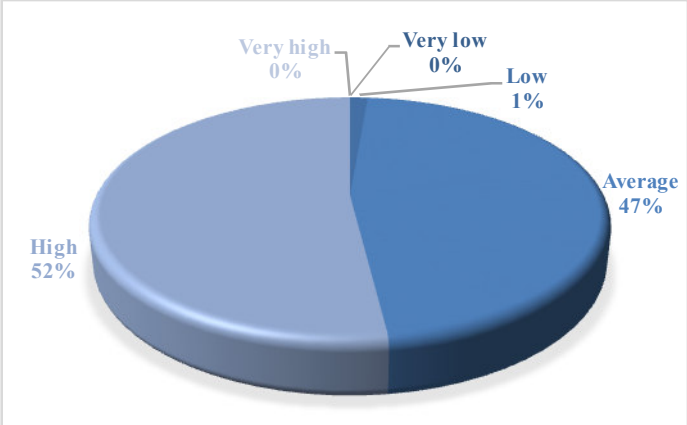

आरेख संख्या 1.1 पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति का स्तर

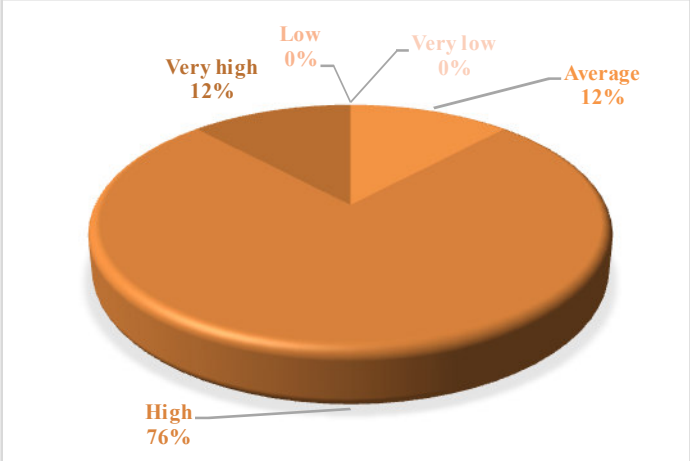

आरेख संख्या 1.2 पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षकों की प्रशिक्षुओं का प्रतिशत

तालिका संख्या 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि पंचकोष के प्रति केवल 1.34 प्रतिशत शिक्षक प्रशिक्षुओं का अभिवृत्ति स्तर कम, 46.67 प्रतिशत शिक्षक प्रशिक्षुओं का अभिवृत्ति स्तर औसत, 51.99 प्रतिशत शिक्षक प्रशिक्षुओं का अभिवृत्ति स्तर उच्च पाया गया जबकि किसी भी शिक्षक प्रशिक्षु का अभिवृत्ति स्तर बहुत कम अथवा बहुत उच्च नहीं पाया गया तथा केवल 12 प्रतिशत शिक्षकों का अभिवृत्ति स्तर औसत, 76 प्रतिशत शिक्षकों का अभिवृत्ति स्तर उच्च एवं 12 प्रतिशत शिक्षकों का अभिवृत्ति स्तर बहुत उच्च पाया गया जबकि किसी भी शिक्षक का अभिवृत्ति स्तर कम अथवा बहुत कम नहीं पाया गया।

तालिका संख्या– 2 पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं एवं माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों की अभिवृत्ति का विवरण

Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.357
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2505S01V13P009

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Scientific Research May'25
Issue–V(I), Volume–XIII

Pupil teachers Attitude (Gender)	Group	N	Mean	Std. Deviation	t	Sig.(2-tailed)
	Male	70	124.30	11.745	2.543	S
	Female	80	129.19	11.743		
(stream)	Arts	73	124.78	12.236	2.141	S
	Science	77	128.92	11.403		
Teachers' attitude(gender)	Male	28	135.29	10.600	.642	NS
	Female	22	133.36	10.422		
Stream	Arts	29	132.24	11.170	1.856	NS
	Science	21	137.48	8.756		

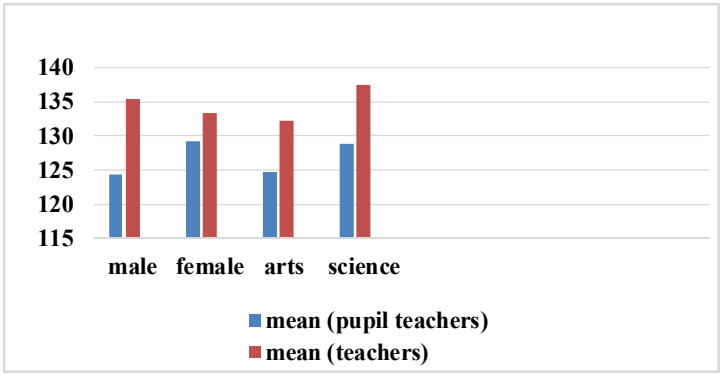

आरेख संख्या 2.1 पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षकों की प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति

तालिका संख्या 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति पुरुष शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 124.30 और 11.745 तथा महिला शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 129.19 और 11.743 तथा टी परीक्षण का मान 2.543 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से अधिक है, जिसके आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि लिंग के आधार पर पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है जबकि कला वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 124.78 और 12.236 तथा विज्ञान वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 128.92 और 11.403 तथा टी परीक्षण का मान 2.141 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से अधिक है, जिसके आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विषय वर्ग के आधार पर पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है तथा पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति माध्यमिक स्तर के पुरूष शिक्षकों का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 135.29 और 10.600 तथा महिला शिक्षकों का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 133.36 और 10.422 तथा टी परीक्षण का मान .642 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से कम है, जिसके आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि लिंग के आधार पर पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है जबकि कला वर्ग के शिक्षकों का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 132.24 और 11.170 तथा विज्ञान वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 137.48 और 8.756 तथा टी परीक्षण का मान 1.856 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से कम है, जिसके आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि लिंग के आधार पर पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

प्रत्येक कोष में पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं एवं माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों की अभिवृत्ति का विवरण

तालिका संख्या– 3 प्रत्येक कोष में पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति का विवरण

Panchkoshas	Group	N	Mean	Std.	t	Sig.(2-

Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.357
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2505S01V13P009

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Scientific Research May'25
Issue–V(I), Volume–XIII

				deviation		tailed)
Annamaya kosha	Male	70	17.29	2.491	.278	NS
	Female	80	17.39	1.984		
	Arts	73	17.18	2.429	0.862	NS
	Science	77	17.49	2.024		
Pranmaya kosha	Male	70	17.00	2.703	1.171	NS
	Female	80	17.46	2.128		
	Arts	73	17.10	2.641	0.739	NS
	Science	77	17.39	2.189		
Manomaya kosha	Male	70	16.77	2.208	1.121	NS
	Female	80	17.19	2.317		
	Arts	73	16.70	2.425	1.550	NS
	Science	77	17.27	2.088		
Vigyanmaya kosha	Male	70	12.54	1.823	0.745	NS
	Female	80	12.76	1.781		
	Arts	73	12.42	1.763	1.570	NS
	Science	77	12.88	1.814		
Anandmaya kosha	Male	70	20.81	2.409	1.156	NS
	Female	80	21.30	2.697		
	Arts	73	20.53	2.523	2.547	S
	Science	77	21.58	2.525		

Df-148

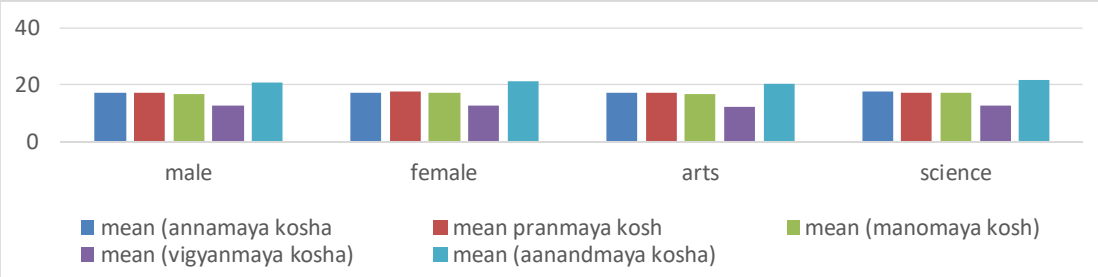

आरेख संख्या 3.1 प्रत्येक कोष के आधार पर पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षकों की प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति

तालिका संख्या 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अन्नमय कोष के अन्तर्गत पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति पुरुष शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 17.29 और 2.491 तथा महिला शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 17.39 और 1.984 तथा टी परीक्षण का मान .278 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से कम है, जिसके आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि अन्नमय कोष में लिंग के आधार पर पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है जबकि कला वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 17.18 और 2.429 तथा विज्ञान वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 17.49 और 2.024 तथा टी परीक्षण का मान 0.862 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से कम है, जिसके आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विषय वर्ग के आधार पर अन्नमय कोष में पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्राणमय कोष के अन्तर्गत पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति पुरुष शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 17.00 और 2.703 तथा महिला शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 17.46 और 2.128 तथा टी परीक्षण का मान 1.171 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से कम है, जिसके आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्राणमय कोष में लिंग के आधार पर पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है जबकि कला वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 17.10 और 2.641 तथा विज्ञान वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 17.39 और 2.189 तथा टी परीक्षण का मान 0.739 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से कम है, जिसके आधार पर निर्मित शून्य

परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विषय वर्ग के आधार पर प्राणमय कोष में पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मनोमय कोष के अन्तर्गत पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति पुरुष शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 16. 77 और 2.208 तथा महिला शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 17.19 और 2.317 तथा टी परीक्षण का मान 1.121 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से कम है, जिसके आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मनोमय कोष में लिंग के आधार पर पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है जबकि कला वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 16.70 और 2.425 तथा विज्ञान वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 17.27 और 2.088 तथा टी परीक्षण का मान 1.550 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से कम है, जिसके आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विषय वर्ग के आधार पर मनोमय कोष में पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

विज्ञानमय कोष के अन्तर्गत पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति पुरुष शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 12.54 और 1.823 तथा महिला शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 12.76 और 1.781 तथा टी परीक्षण का मान 0.745 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से कम है, जिसके आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विज्ञानमय कोष में लिंग के आधार पर पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है जबकि कला वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 12.42 और 1.763 तथा विज्ञान वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 12.88 और 1.814 तथा टी परीक्षण का मान 1.570 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से कम है, जिसके आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विषय वर्ग के आधार पर विज्ञानमय कोष में पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

आनन्दमय कोष के अन्तर्गत पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति पुरुष शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 20.81 और 2.409 तथा महिला शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 21.30 और 2.697 तथा टी परीक्षण का मान 1.156 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से कम है, जिसके आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आनन्दमय कोष में लिंग के आधार पर पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है जबकि कला वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 20.53 और 2.523 तथा विज्ञान वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 21.58 और 2.525 तथा टी परीक्षण का मान 2.547 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से अधिक है, जिसके आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विषय वर्ग के आधार पर आनन्दमय कोष में पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

तालिका संख्या– 4 प्रत्येक कोष में पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों की अभिवृत्ति का विवरण

Panchkoshas	Group	N	Mean	Std. deviation	t	Sig.(2-tailed)
Annamaya kosha	Male	28	18.36	1.948	0.939	NS
	Female	22	18.95	2.554		
	Arts	29	18.45	2.229	0.634	NS
	Science	21	18.86	2.265		
Pranmaya kosha	Male	28	19.43	2.235	0.336	NS
	Female	22	19.64	2.083		
	Arts	29	19.24	2.340	1.121	NS
	Science	21	19.90	1.841		
Manomaya kosha	Male	28	17.64	2.857	0.605	NS
	Female	22	18.09	2.223		
	Arts	29	17.28	2.631	1.894	NS
	Science	21	18.62	2.355		
Vigyanmaya kosha	Male	28	15.29	1.718	2.619	S

	Female	22	14.05	1.588		
	Arts	29	14.59	1.783	0.725	**NS**
	Science	21	14.95	1.746		
Anandmaya kosha	**Male**	28	27.71	2.355	1.933	**NS**
	Female	22	26.45	2.198		
	Arts	29	26.72	2.477	1.609	**NS**
	Science	21	27.76	2.071		

Df-148

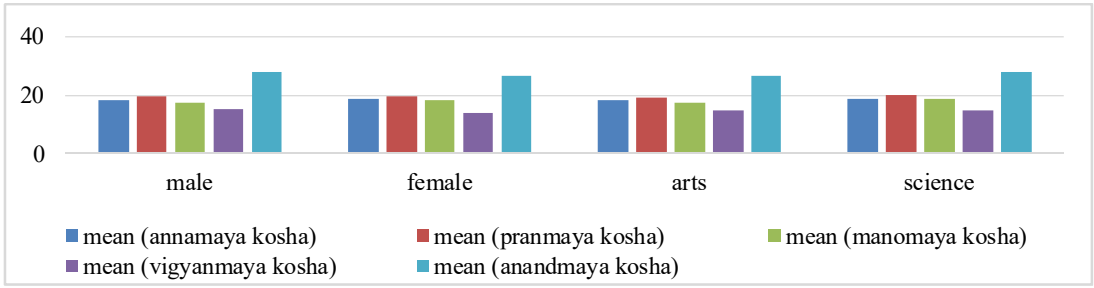

आरेख संख्या 3.1 प्रत्येक कोष के आधार पर पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षकों की प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति

तालिका संख्या 4 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अन्नमय कोष के अन्तर्गत पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति पुरुष शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 18.36 और 1.948 तथा महिला शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 18.95 और 2.554 तथा टी परीक्षण का मान 0.939 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से कम है, जिसके आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि अन्नमय कोष में लिंग के आधार पर पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है जबकि कला वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 18.45 और 2.229 तथा विज्ञान वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 18.86 और 2.265 तथा टी परीक्षण का मान 0.634 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से कम है, जिसके आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विषय वर्ग के आधार पर अन्नमय कोष में पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्राणमय कोष के अन्तर्गत पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति पुरुष शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 19.43 और 2.083 तथा महिला शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 19.64 और 2.083 तथा टी परीक्षण का मान 0.336 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से कम है, जिसके आधार पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुयी एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्राणमय कोष में लिंग के आधार पर पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है जबकि कला वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 18.45 और 2.229 तथा विज्ञान वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 18.86 और 2.265 तथा टी परीक्षण का मान 0.634 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से कम है, जिसके आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विषय वर्ग के आधार पर प्राणमय कोष में पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मनोमय कोष के अन्तर्गत पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति पुरुष शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 17. 64 और 2.857 तथा महिला शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 18.09 और 2.223 तथा टी परीक्षण का मान 0.605 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से कम है, जिसके आधार पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुयी एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मनोमय कोष में लिंग के आधार पर पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है जबकि कला वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 17.28 और 2.631 तथा विज्ञान वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 18.62 और 2.355 तथा टी परीक्षण का मान 1.894 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से कम है, जिसके आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विषय वर्ग के आधार पर मनोमय कोष में पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

विज्ञानमय कोष के अन्तर्गत पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति पुरुष शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 15.29 और 1.718 तथा महिला शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 14.05 और 1.588 तथा टी परीक्षण का मान 2.619 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से अधिक है, जिसके आधार पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुयी एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विज्ञानमय कोष में लिंग के आधार पर पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है जबकि कला वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 14. 59 और 1.783 तथा विज्ञान वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 18.62 और 1.746 तथा टी परीक्षण का मान 0.725 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से कम है, जिसके आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विषय वर्ग के आधार पर विज्ञानमय कोष में पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

आनन्दमय कोष के अन्तर्गत पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति पुरुष शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 27.71 और 2.355 तथा महिला शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 26.45 और 2.198 तथा टी परीक्षण का मान 1.933 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से कम है, जिसके आधार पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुयी एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आनन्दमय कोष में लिंग के आधार पर पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है जबकि कला वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 26.72 और 2.477 तथा विज्ञान वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षुओं का मध्यमान और मानक विचलन क्रमशः 27.73 और 2.071 तथा टी परीक्षण का मान 1.609 प्राप्त हुआ जो कि सारणीयन मान 1.98 से कम है, जिसके आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई एवं निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विषय वर्ग के आधार पर आनन्दमय कोष में पंचकोषीय समग्र विकास के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिचर्चा–

पंचकोषीय अवधारणा के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं एवं शिक्षकों की सामान्य, उच्च एवं अति उच्च अभिवृत्ति इसकी महत्वता को स्पष्ट करती है। वर्तमान सामयिक परिस्थितियों में भारतीय ज्ञान के प्रति अभिवृत्ति, पंचकोषीय अवधारणा के प्रति सतत् विकास को प्रोत्साहित करने में सहायक हो सकती है। प्रस्तुत शोधकार्य के परिणाम यह भी प्रदर्शित करते हैं कि पंचकोषीय समग्र विकास की अवधारणा को सिद्ध करने में विद्यालयी स्तर के शिक्षकों की उच्च एवं अति उच्च अभिवृत्ति महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, जिसके लिए आवश्यक है कि विद्यालयी स्तर पर शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए ऐसी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए जिससे कि विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों ही पंचकोष की महत्वता को स्पष्ट समझ सकें। जीवनशैली में परिवर्तन एवं वर्तमान सामयिक घटनाओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण, पंचकोष की अवधारणा के प्रति जागरूकता के अभाव का एक कारण हो सकता है। किन्तु नयी शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत पारंपरिक भारतीय ज्ञान की विरासत के सतत् विकास हेतु किये गये प्रावधानों का क्रियान्वयन पंचकोषीय अवधारणा के प्रति भी शिक्षक प्रशिक्षुओं, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को परिचित कराने एवं इसकी उपयोगिता को समझने में सहायक हो सकता है।

निष्कर्ष–

नयी शिक्षा नीति 2020 की संस्तुति के सन्दर्भ में पंचकोषीय अवधारणा के समावेशन की उपयोज्यता के प्रति भावी शिक्षकों एवं सेवारत शिक्षकों में संवेदनशीलता विकसित करने में यह शोध सहायक सिद्ध हो सकता है, जिससे कि शिक्षक प्रशिक्षु एवं शिक्षक, पंचकोष के महत्व एवं इसके प्रायोगिक ज्ञान की उपयोगिता से लाभान्वित हो सके। इसके साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक और भारतीय पारंपरिक ज्ञान के संबंध एवं इसकी महत्वता के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं एवं शिक्षकों के साथ–साथ विद्यालयी स्तर पर विद्यार्थियों में भी अंतर्दृष्टि विकसित करने में इस शोध की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।

सुझाव–

प्रस्तुत शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं–

- पंचकोषीय समग्र विकास की अवधारणा के प्रति केवल शिक्षक प्रशिक्षु ही नहीं बल्कि सभी को संवेदनशील होने की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध कार्य केवल शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र के विद्यार्थियों पर संचालित किया गया है किन्तु अन्य व्यवसायिक क्षेत्रों के विद्यार्थियों को भी पंचकोषीय अवधारणा संबंधी शोध कार्यों में सम्मिलित किया जा सकता है।
- विद्यालयी स्तर पर भी पंचकोषीय अवधारणा के प्रति शोधकार्य किया जा सकता है।
- पंचकोषीय अवधारणा के प्रति जागरूकता हेतु विद्यालयी एवं उच्च शिक्षा स्तरों पर कार्यशालाओं एवं संगोष्ठियों का आयोजन किया जाना चाहिए।

- पंचकोषीय अवधारणा से संबंधित ज्ञान को विद्यालयी एवं उच्च शिक्षा के प्राठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

References-

2020, N. E. P. (2020). *Vision of Quality Education and Hoslistic Development.* Ministry of Education.

Bhalla, S. (n.d.). *Proceeding of The International Conference on Science and Philosophy in Indian Knowledge System.* Retrieved from Researchgate: https://www.researchgate.net/profile/Suresh-

Chandel, Dr. N. & Parashar (January, 2024) Indian Knowledge System and NEP: A Brief Analysis. jetir.

Chauhan, Dr. D. (may 2023). The Importance of Panchkosha Principles in Human Life. *JETIR*, 1-7.

Kaushal, D. S. (2023, october 6). Navigating Pancha Kosha for New Learning Paradigms. *RNI No: HARENG/2021/35200, xiv*, 1-6.

Kumari, N. (2023). Panchkosha Corestone of Human Development. *The International Journal of Indian Psychology*, 1-9.

Management, H. R. (n.d.). *MHRD Project Under Its National Mission on Education Through ICT, Paper 12: Quality Human Development in Indian Perspectives, Module 06- Development of Panchkosha.*

Mandavkar, P. (2023, October). Indian Knowledge System (IKS). Kalamb, Maharashtra, India.

NCERT. (2022). *National Curriculum Framework for Foundational Stage 2022.* Retrieved from NCERT: https://ncert.nic.in/flipbook/NCF/National_Curriculum_Framework_for_Foundational_Stage_2022/mobile/index.html#p=54

Pramod Kumar Ph.D., I. I. (July 2024). Human Behaviour in Relation to Happiness in Life Based on Panch Kosha Theory: Indian and Western view of points. *researchgate.net/publication/382598438*.

Sarif, M. N. (june 2024). Human Personality Development through the Lens of Indian Philosophical Psychology : A Retrospective Analysis. *researchgate.net/publication/381660891*.

Toral P. Panchal, D. N. (12 december 2023). EFFECTIVENESS OF PANCHKOSH DEVELOPMENT PROGRAM IN PRE-SCHOOL CHILDREN.

Internet links-

https://www.yogapoint.in
https://www.scribbr.com/methodology/literature-review/
https://epgp.inflibnet.ac.in/epgpdata/uploads/epgp_content/S001610/P001798/M025841/ET/1513923600M6Q1DevelopmentofPanchkosha.pdf
https://www.shvasa.com/yoga-blog/what-are-the-pancha-koshas-2
https://www.yogidia.com/yogidia/blog/pancha-kosha#intro
https://www.shri-kripalu-kunj-ashram.org/panchkosh.html
https://yoga.ayush.gov.in/blog?q=64
https://www.iafaforallergy.com/pancha-kosha-theory/
https://yogainternational.com/article/view/the-koshas-5-layers-of-being/
https://podarprep.com/panchakosha-five-elements-of-comprehensive-growth/